The material is concerned with the PG students of VKSU, Ara.
Semester I (MA) CC1 (General Psy)

Unit III

Paper CC1

Topic → Basic Motivational Concepts -

Basic motivational Concepts - मनोविज्ञान मनुष्य के वातावरण से संबंधित अभियोजन व्यवहारों का अध्ययन करता है परन्तु यह तब तक संभव नहीं हो पाता है जब तक मनुष्य के वातावरण से संबंधित व्यवहारों को प्रेरित करने वाली शक्ति को नहीं समझा जाए। व्यक्ति वातावरण के किसी उत्तेजना के प्रति एक खास तरह की प्रतिक्रिया क्यों करता है? उसका व्यवहार एक निश्चित दिशा की ओर क्यों रहता है तथा उसका व्यवहार लक्ष्य को प्राप्त कर लेने के बाद क्यों रुक जाता है। इन प्रश्नों का उत्तर प्रेरणा के विश्लेषण से प्राप्त होते हैं।

व्यक्ति वातावरण में अनेक प्रकार के वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बीच रहता है प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग आवश्यकताएँ होती है जिसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ प्रतिक्रिया करने का प्रयास करता है। प्रत्येक व्यक्ति आवश्यकतानुसार

प्रतिक्रिया करता है यहाँ यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का व्यवहार प्रेरणात्मक स्वरूप (Motivational in nature) का होता है इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानव व्यवहार प्रेरणात्मक व्यवहार (Motivational behaviour) की संज्ञा दी जाती है।

प्रेरणा (Motive) लैटिन के मोटिवस शब्द से बना है जिसका अर्थ to move होता है। यही प्रेरणा व्यक्ति को कार्य करने हेतु प्रेरित करती है जिसमें व्यक्ति की आंतरिक शक्ति प्रदान करने वाली ऊर्जा का बोध होता है परिणाम स्वरूप व्यक्ति वातावरण में उपस्थित उत्तेजना के प्रति प्रतिक्रिया करने हेतु कार्यशील होता है।

प्रेरणा शब्द का उपयोग विभिन्न लोगों ने अलग-अलग अर्थों में किया है कुछ लोगों के द्वारा प्रेरणा को शक्ति के रूप में माना गया है जो किसी क्रिया को उत्पन्न करती है। व्यक्ति उस शक्ति को बाहरी एवं आन्तरिक दोनों तरह से प्राप्त करता है प्रेरणा का यह अर्थ विशेषण के रूप में होता है कुछ लोग प्रेरणा का अर्थ प्रणोदन (drive) से लगाते हैं प्रणोदन व्यक्ति के उस अवस्था को कहते हैं जो किसी क्रिया को करने हेतु उस व्यक्ति को अग्रसर करता है प्रेरणा का यह रूप संज्ञा के रूप में होता है कुछ लोग क्रिया को करने के लिए जल देने वाली चीज को प्रेरणा कहते हैं

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर प्रेरणा शब्द का उपयोग शक्ति (Power), प्रणोदन (drive) तथा बल (force) जो किसी क्रिया को अग्रसारित करती है। अतः स्पष्ट होता है कि सामान्य तौर सामान्य व लोगों के बीच प्रेरणा के अनेक अर्थ हैं।

परन्तु मनोविज्ञान में प्रेरणा व्यक्ति के उस अवस्था को कहते हैं जिसके उत्पन्न होने से वह बेचैनी का अनुभव करता है यह व्यक्ति का आन्तरिक अवस्था होती है क्योंकि इसके उत्पति उस व्यक्ति में कमी, आवश्यकता या उसकी इच्छा से होती है। व्यक्ति इस कमी, आवश्यकता या इच्छा की पूर्ति हेतु एक स्वभाव का प्रतिक्रिया या व्यवहार करता है उदाहरण के लिए भूख की अवस्था में व्यक्ति में आन्तरिक परिवर्तन होता है जिससे वह बेचैन हो जाता है इस बेचैनी को दूर करने के लिए व्यक्ति को भोजन की आवश्यकता होती है तब वह भोजन की खोज में दौड़ में जाता है यहाँ उस व्यक्ति का व्यवहार एक स्वाभाविक होता है अतः इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का व्यवहार चयनात्मक अर्थात स्वाभाविक दिशा में निर्देशित होता है अतः हम कह सकते हैं कि प्रेरणात्मक व्यवहार चयनात्मक और लक्ष्य निर्देशित (goal-directed) होता है।

प्रेरणात्मक व्यवहार (का यह भी एक विशेषता है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार (क्रिया करता है तब उसकी क्रिया आवश्यकता की पूर्ति या उसके उद्देश्य की पूर्ति होने तक चलती रहती है और आवश्यकता की पूर्ति हो जाने पर वह क्रिया समाप्त हो जाती है क्योंकि उसकी बेचैनी भी समाप्त हो जाता है प्रेरणा को मनोवैज्ञानिकों ने भी परिभाषित किया है जो निम्नलिखित है:

→ शेरिफ, गिल्मर एवं स्कीनर के अनुसार प्रेरणा व्यक्ति के क्रिया करने की प्रवृत्ति को कहते हैं जो किसी प्रणोदक (drive) से आरम्भ होती है तथा आत्मयोजन के पश्चात समाप्त हो जाती है

→ गिलफोर्ड - प्रेरणा कोई किसी खास आन्तरिक अवस्था है जो क्रिया को प्रारंभ और जारी रखती है

→ न्यूकॉम्ब - प्रेरणा व्यक्ति के शारीरिक शक्ति वातावरण में उपस्थित विभिन्न चीजों को प्राप्त करने की ओर चयनात्मक ढंग से अग्रसारित होती है (Motivation defined as a state of individual & in which the bodily energy is mobilized and selectively directed towards the parts of the environment.

⇒ मौर्गन एवं किंग – प्रेरणा किसी प्राणी की भीतरी अवस्था, व्यवहार एवं उस लक्ष्य की ओर इंगित करता है जिस ओर उसका व्यवहार निर्देशित होता है।

Motivation defined as a state within the individual, to behaviour and to the goals toward which behaviour is directed

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर प्रेरणा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(1.) प्रेरणा किसी व्यक्ति की एक खास अवस्था होती है।

(2.) प्रेरणा व्यक्ति का आन्तरिक अवस्था है जो आवश्यकतानुसार उत्पन्न होती है

(3.) आवश्यकता उत्पन्न होने पर व्यक्ति एक खास प्रकार का बेचैनी का अनुभव करता है और वह उस आवश्यकता की पूर्ति हेतु व्यक्ति क्रिया करने हेतु अपने आप को अग्रसारित करता है।

(4.) प्रेरणात्मक व्यवहार चयनात्मक स्वरूप का होता है तथा उसका व्यवहार किसी लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निर्देशित होता है।

(5) किसी व्यक्ति में प्रेरणात्मक व्यवधान तब तक रहता है जबतक उसके उद्देश्य की पूर्ति न हो जाए।

(6) जब व्यक्ति अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु लक्ष्य की तरफ ज्यों-ज्यों बढ़ता है तो उसकी कार्यशीलता में कमी आ जाती है और लक्ष्य प्राप्ति के बाद कार्यशीलता समाप्त हो जाती है।

अतः

By

Dated-16/10/2025

Kumar Patil
Assistant professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara.